International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

फैजाबाद मण्डल की राजनैतिक भौगोलिक पृष्ठभूमि

उमेश कुमार यादव
शोध छात्र
(भूगोल विभाग) दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

भूमिका –प्राचीन समय से सम्पूर्ण पृथ्वी पर राजनीति का विषय विद्यमान रहा है, विश्व का कोई भी परिक्षेत्र इससे अछूता नही रहा है। समय–समय पर प्रत्येक क्षेत्र किसी न किसी कारण से राजनीति प्रक्रिया से प्रभावित होते आ रहे है। इसके साथ ही अनेक विद्वानों ने राजनीति व राजनीति भूगोल के सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त किये है, जिससे तत्कालीन समाज प्रभावित होता आ रहा हैं। उस समय के विद्वानों के विचार पूर्णतः राजनीति भूगोल पर केन्द्रीत न होकर सामूहिक अभिव्यक्ति के रूप में प्रकट होता था। **ह्वीटिलिसी (1944)** "राजनीति भूगोल में राजनीति क्रिया–कलाप एवं पृथ्वो के अन्तर्सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है"।अर्थात पृथ्वी के विभिन्न तथ्य स्थिति, संरचना, धरातल, जलवायु तथा पकृति निमित्त जैवीय और अजैवीय तत्व तथा मानव जनसंख्या एवं उसके द्वारा विकसित आर्थिक क्रिया–कलाप आदि राज्य के विभिन्न राजनीतिक प्रक्रियाओं घटनाओ को एक सीमा तक प्रभावित करते है और स्वयं भी प्रभावित होते है। इस तरह दानो में अन्तर्सम्बन्ध मिलता है, जो क्षेत्रीय व कालिक रूप से परिवर्तनशील है।

इससे स्पष्ट है कि राजनीतिक भूगोल राज्य से सम्बन्ध रखता है, जिसके कारण एक विशिष्ट भौगोलिक स्वरूप का विकास होता है। राज्य के कुछ विशेष कार्य भी है, जिनमें जनसंख्या पोषण एवं रक्षा का स्थान सर्वप्रमुख होता है। इसके लिए राज्य को प्राकृतिक एवं आर्थिक साधनों पर ही निर्भर होना होता है। चूकि राज्य के संसाधन ही राज्य के विकास का मार्ग प्रशस्त करते है इसलिए राजनीतिक भूगोल में उन समस्त प्राकृतिक एवं आर्थिक संसाधनों का अध्ययन किया जाता है, जो राज्य से सम्बन्धित होते है। इसके अतिरिक्त उन कारणों का भी अध्ययन होता है, जिनसे किसी राज्य का एक विशेष स्वरूप उभरकर सामने आता है। अतः राज्य की स्थिति, धरातल, जलवायु, मिटटी का उपजाउपन, जलशक्ति व प्राकृतिक रूप आदि तथा राज्य के आर्थिक साधनों के अध्ययन के द्वारा राज्य एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई के रूप में विकसित होता है।इससे स्पष्ट होता है कि राजनीतिक भूगोल राज्य के अध्ययन से सम्बन्धित होता है और राज्य के विभिन्न तत्वों में जो क्षेत्रीय विभिन्नता पायी जाती है वह राज्य के राजनीतिक कार्यो को भी एक सीमा तक प्रभावित करती है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि –प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र फैजाबाद मण्डल त्रेतायुग में भगवान राम की जन्मभूमि एवं कर्म स्थली के रूप में विश्व प्रसिद्ध यह क्षेत्र पावन पतित सरयु नदी के तट पर स्थित है, जो प्रारम्भ समय से ही हिन्दुओं की गौरवगाथा व मुस्लिमों के सौहार्द का प्रतीक है। इस मण्डल का इतिहास अत्यन्त ही गौरवपूर्ण व समृद्ध है। यहा एक तरफ पावन पतित मा सरयू नदी के रूप में अवतरित होकर सदियो से मानव कल्याण करती आ रही है वही दूसरी तरफ मण्डल के दक्षिणी भाग में विद्यमान गोमती नदी का स्वरूप जीवनदायिनी के रूप में विद्यमान है। फजाबाद मण्डल की स्थापना का श्रेय नवाब सादत अली खा ने 1730 ई0 में किया था और इस नगर का अपनी राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित किया।इस मण्डलमें जहा एक तरफ नवाब शुजाउदौला के बेगम का मकबरा स्थित है, वही दूसरी तरफ यह मण्डल भगवान श्री राम के जन्मभूमि के रूप में प्रतिष्ठित है। इसके साथ ही यह 1857 में होन वाली क्रान्ति का भी यह परिक्षेत्र साक्षी रहा है, जिसके अन्तर्गत मौलवी अहमदुल्ला ने देश के स्वतन्त्रता में अपना योगदान दिया था जहा इन्हे डेकाशाह या ढोल वाले मौलवी के रूप में जाना जाता था अग्रेज इनकी गतिविधि से इतने चिन्तित होगये थे कि इनके पकडने वाले का वे 50000 रूपये का नगद पुरस्कार देने की घोषणा कर चुके थे। 13 नवम्बर 2018 से इस मण्डल का नाम परिवर्तित करके फैजाबाद मण्डल के स्थान पर अयोध्या मण्डल कर दिया गया है।

भौगोलिक परिचय – फैजाबाद मण्डल की अपनी विशिष्ट भैगोलिक स्थिति सरयु व गोमती नदियो के स्थित विशिष्टताओं के कारण है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

स्थिति एवं विस्तार – अध्ययन क्षेत्र गोमती व सरयु नदियो के मध्य स्थित पूर्वी उत्तर प्रदेश में स्थित एक सांस्कृतिक एवं धार्मिक नगर के रूप में विख्यात है। यद्यपि यह क्षेत्र सास्कृतिक दृष्टि से धनी ह किंतु आर्थिक व औद्योगिक दृष्टि से अतयन्त पिछडे क्षेत्र की श्रेणी में सम्मिलित है। इसका अक्षांशीय विस्तार 25^{0}50' से 27^{0}19'उत्तरो अक्षांश एवं देशान्तरीय विस्तार 80^0 55' से83^{0}10' पूर्व में हैं। मण्डल का कुल भोगोलिक क्षेत्रफल 13765 वर्ग किमी0 है, जो सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के 5.97 प्रतिशत है।

प्रशासनिक संगठन—फैजाबादमण्डल के विशिष्ट भौगोलिक स्वरूप के निर्धारण में क्षेत्र के उत्तर में प्रवाहित सरयु नदी एवं मध्यवर्ती दक्षिण में गोमती नदी का महत्वपूर्ण योगदान है। उत्तर में प्रवाहित सरयु नदी इस मण्डल को अन्य मण्डलो से अलग करती है। यहाँ प्रवाहित मुख्य नदियों के अन्तर्गत घाघरा, गोमती एवं सहायक नदियों में मड़हा, टोंस, विशुही, मझोई, कल्याणी आदि नदियों का प्रवाह क्षेत्र हैं। इसके पश्चिम में सीतापुर लखनऊ, उत्तर में बस्ती, गोण्डा पूव में जौनपुर, आजमगढ़ एवं दक्षिण में रायबरेली, प्रतापगढ़ जनपद स्थित है।

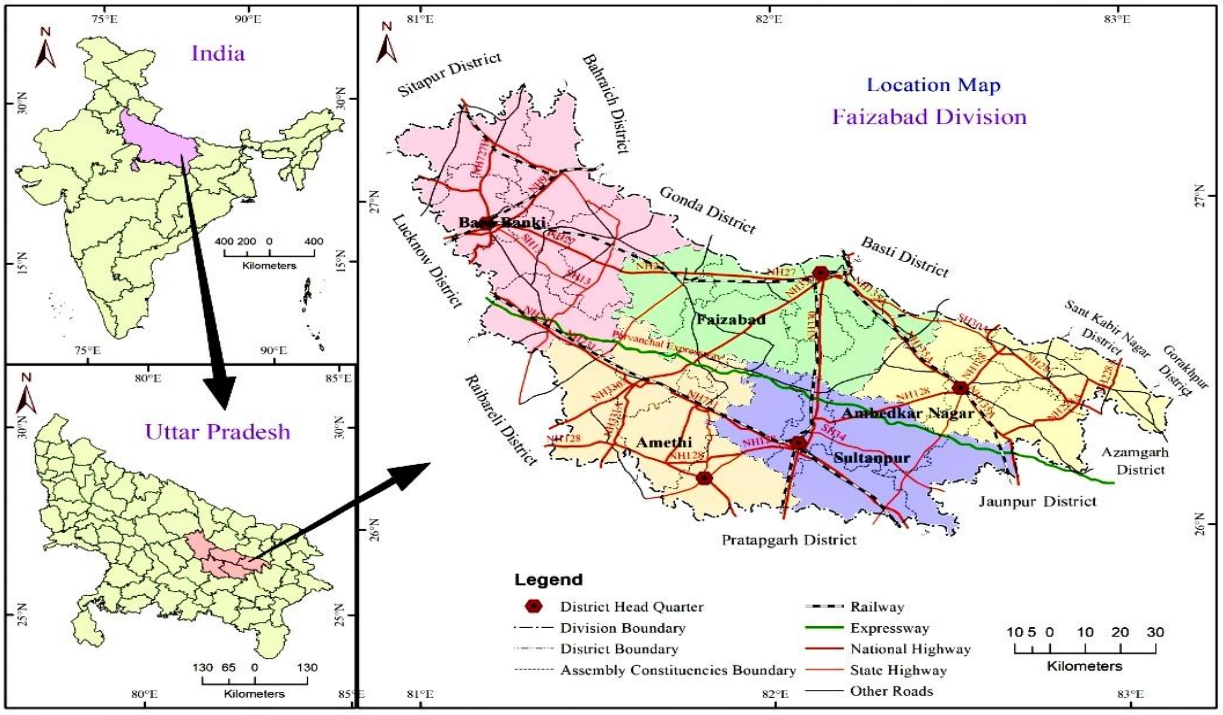

तालिका संख्या- 1

फैजाबाद मण्डल : प्रशासनिक संगठन–2018

जनपद	क्षेत्रफल (वर्ग किमी0 में)	क्षेत्रफल (प्रतिशत में)	विधानसभाओं की संख्या	विकासखण्डों की संख्या
छत्रपति शाहू जी महराज नगर	2329	16.91	05	13
सुल्तानपुर	2672	19.41	05	14
बाराबंकी	3892	28.27	07	15
फैजाबाद	2522	18.32	04	11
अम्बेडकरनगर	2350	17.07	05	09
मण्डल	**13765**	**100**	**26**	**62**

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि फैजाबाद मण्डल के के अन्तर्गत कुल जनपदों की संख्या 5 है, जिसके अन्तर्गत छत्रपति शाहू जी महराज नगर,सुल्तानपुर, बाराबंकी फैजाबाद एवंअम्बेडकरनगरजनपद सम्मिलित है। फैजाबाद मण्डल में तहसीलो की कुल संख्या 25 है, जिसके अन्तर्गत जनपदवार इनका वितरण फैजाबाद जनपद में 5, अम्बेडकरनगर में 5, बाराबंकी में 6, छत्रपति शाहू जी महराज नगर में 5 एवं सुल्तानपुर में 4 है। इसी प्रकार मण्डल में विकासखण्डो का कुल वितरण 62 है, जिसके अन्तर्गत फैजाबाद में 11, अम्बेडकरनगर में 09, बाराबंकी में 15, अमेठी में 13 एवं सुल्तानपुर में 14 है। मण्डल में कुल न्याय पंचायतों की संख्या 588, ग्राम पंचायतों की संख्या 4602 है। इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र में कुल ग्रामों की संख्या 7564 है, जिसमें आबाद ग्रामों की संख्या 7376 है जबकि गैर आबाद ग्रामों की संख्या 188 है। मण्डल का मुख्यालय उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ से 135 किमी0 उत्तर पूर्व में स्थित है। इसी प्रकार मण्डल में कुल लोक सभा की संख्या 5 है, जबकि विधानसभाओं की संख्या 26 है। विधानसभाओं के वितरण के अन्तर्गत बाराबंकी में 7, फैजाबाद में 4, सुल्तानपुर में 5, अम्बेडकरनगर में 5 एवं छत्रपति शाहू जी महराज नगरजनपद में 5 विधानसभाएं है।

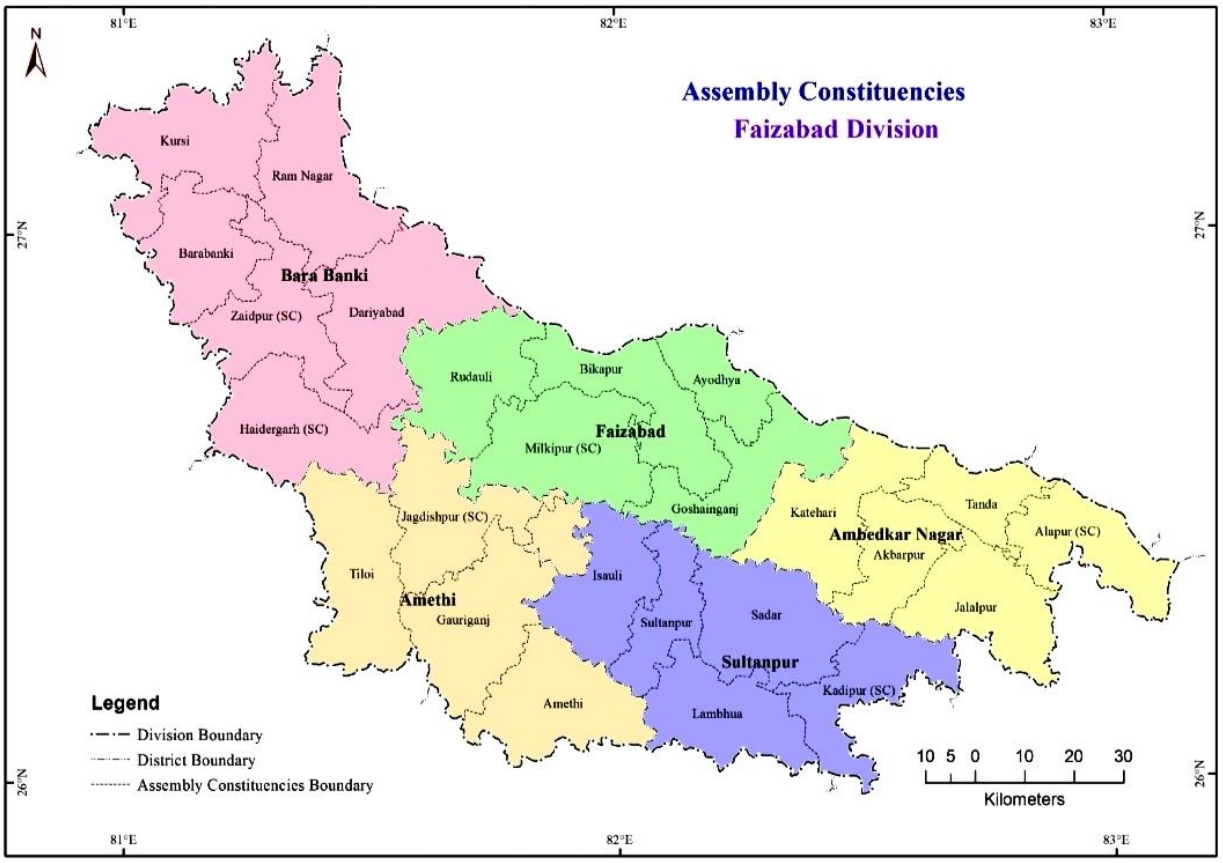

उद्देश्यः–

प्रस्तुतशोध प्रपत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र फैजाबाद मण्डल की राजनीतिक भौगोलिक पृष्ठभूमि का अध्ययन एवं विश्लेषण करना है।

आँकड़ो के स्रोत एवं विधि तंत्रः–

प्रस्तुतशोध प्रपत्र म शोध कार्य के लिए द्वितीयक आँकड़ो को आधार के रूप मे लिया गया है। सम्बन्धित आँकड़े वर्ष2018 का विस्तृत अध्ययन सांख्यिकी पत्रिका से किया गया है। आँकड़ों का अंकन, विश्लेषण एवं मानचित्रण का कार्य भी किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भौतिक बनावट :—संरचनात्मक भू-स्वरूप भौगोलिक अध्ययन के अन्तर्गत मण्डल को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करती है। अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा से सम्बन्धित होने के कारण इसका भू-संरचनात्मक स्वरूप उत्तर के विशाल मैदान की संरचना एवं उत्पत्ति से सम्बन्धित है। यह सरयु व गोमती नदियों के मध्य स्थित गंगा के वृहद मैदान का विशिष्ट स्वरूप है। यद्यपि मैदान की संरचना जलोढ़ से निर्मित होने के बावजूद भी विभिन्न क्षेत्रों के जमाव की प्रक्रिया में संरचनात्मक रूप से भिन्नता मिलती है।

प्रारम्भ में यह भू-भाग एक जलोढ़ पूरित गर्त के रूप में था, जो हिमालय पर्वत से निकलने वाली सतत प्रवाहित नदियों के अपरदनात्मक प्रक्रिया के फलस्वरूप होने वाले जलोढ़ जमावों के दीर्घकालिक प्रक्रिया से निर्मित हुई है। यद्यपि इस जलोढ़ से निर्मित मैदान की गहराई के विषय में अनेक मत प्रचलित है, जो प्लीस्टोसीन युग से प्रारम्भ होकर वर्तमान समय तक चल रही है। **ब्रिटीश विद्वान ओल्डहम** ने मध्य गंगा मैदान के जलाढ़ की मोटाई के विषय में विशिष्ट तथ्य प्रस्तुत किये"। इनके अनुसार उत्तरी भाग की औसत मोटाई 4500 मीटर से 6100 मीटर के मध्य पायी जाती है। इसी प्रकार वायवाहिक चुम्बकत्वमापी सर्वेक्षण से स्पष्ट किया गया कि मध्य गंगा मैदान के जलोढ़ की मोटाई उत्तर में 8000 मीटर, पश्चिम में 6000 मीटर एवं दक्षिण में प्रायद्वीपीय पठार के समीप 3000 मीटर हैं।

मैदान की संरचना व विकास की प्रक्रिया के विषय में **प्रसिद्ध भूवैज्ञानिक वाडिया** कहते है कि यह मैदानी भाग हिमालय के अत्याधिक वलन के सम्मुख स्थित गर्त है, जो ठोस पठारी भूभाग से अवरोधित एक अभिनतीय भू भाग है। शिवालिक के अन्तिम निर्माण के पश्चात से ही जलोढ़ की प्रक्रिया आज तक निरन्तर चल रही है। **कृष्णन 1960** ने अपना विचार व्यक्त किया है कि जलोढ़ मैदान का निर्माण भारतीय महाद्वीप के उत्तर की ओर खिसकने और टेथिज सागर में निक्षेपित जलोढ़ के बीच दबाव से उपर उठने के कारण हुआ है।मण्डल का यह भू-भाग को नदिया प्लीस्टोसीन युग से ही अपने अपवाह तन्त्र के कारण जलोढ़ का निर्माण करती आ रही है, जिसकी गहराई हजारो फीट है। गंगा का यह मध्यवर्ती मैदान संरचना की दष्टिकोण से सर्वत्र एक समान दिखाई देता है लकिन इसका विकास कालान्तर में जमाव की निक्षेप प्रक्रिया से सम्भव हो पाया है। यहाँ जलोढ़ की औसत मोटाई 8000 मीटर से अधिक है।नवीनतम साक्ष्यों के अनुसार जनपद का इस परिक्षेत्र में जलोढ़ की गहराई लगभग 8000 मी0 है, जो दक्षिण में घटकर 500 मी0 तक रह जाती है।

उच्चावच :—अध्ययन क्षेत्र गंगा व उसकी सहायक नदियों घाघरा,गोमती, विसुही,टोंस, मझोई, कल्याणी आदि के जलोढ़ मृदा से निर्मित विश्व के उवरतम भू भागों में से एक है। इस क्षेत्र में जलोढ़ मृदा की गहराई 5000 मीटर से अधिक देखने को मिलती है, जो दक्षिण की ओर कम होती जाती है। उच्चावच की दृष्टिकोण से फैजाबाद मण्डल का धरातल समविन्यासी क्रम का है

फैजाबाद मण्डल के धरातल का सामान्य ढ़ाल स्वरूप उत्तर–पश्चिम से दक्षिण पूर्व की तरफ है, जो सामान्यत 1^0 के लगभग है, इसी ढाल का अनुसरण करती हुई मण्डल की प्रमुख नदिया सरयु एवं गोमती उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व की तरफ प्रवाहित होती है। स्थानीय भिन्नता के अनुरूप इसे चारभौतिक विभागों में विभाजित किया जा सकता ह।

अपवाह तन्त्र :—स्थलरूप के संरचनात्मक स्वरूप, विकास तथा उच्चावच के निर्धारण में अपवाह की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। किसी भी स्थान विशेष में प्रवाहित मुख्य नदी एवं सहायक अन्य नदियों के अपरदनात्मक एवं निक्षेपण प्रकृति के कारण उस क्षेत्र का भू-स्वरूप का निर्धारण होता है। इसके साथ ही अपवाह तंत्र का विकास भी कई बातों पर निर्भर करता है, जिसके अन्तर्गत भूतल की संरचना, भूतल का ढ़ाल, नदी जल की मात्रा व प्रवाह तथा आकार आदि है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव अपवाह एवं तत्सम्बन्धी स्थलाकृति पर पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र फजाबाद मण्डल में अपवाह का निर्धारण उत्तर में प्रवाहित घाघरा (सरयु) नदी एवं मध्यवर्ती दक्षिण में प्रवाहित गोमती नदी द्वारा होता है। इसके अतिरिक्त सहायक नदियों के अन्तर्गत मड़हा, टोंस, विशुही, मझोई, कल्याणी नदी मंद ढाल वाला होने के कारण मंद गति से प्रवाहित होते है। वर्षा ऋतु में इनका स्थलाकृति के स्वरूप के निर्धारण में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

विशेष योगदान होता है। मण्डल में मुख्य व सहायक नदियों द्वारा निर्मित मैदानी क्षेत्र के धरातलीय स्वरूप में विषमता उत्पन्न होती है।

झीले एवं तालाब –सामान्यतः मैदानी क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली नदियों के मार्ग परिवर्तन से अनेक प्रकार के स्थलाकृतियों का जन्म होता है, जिसमें झीले व तालाबो का स्थान महत्वपूर्ण है। पंस्तुत अध्ययन क्षेत्र में अनेक झीले व तालाब भी पायी जाती है। नदियो के मार्ग परिवर्तन व बाढ ग्रस्त होने के कारण यहा अनेक तालाबों का उदभव हुआ है। फजाबाद जनपद में सीताघाट झाल क्षेत्रफल में सबसे बड़ा है। इसके अतिरिक्त इस जनपद में करोना, गोकुला, अहिरोन, चन्दबरघा, परसावन, डेली गरिधर, थारमपुर, महुलारा, नीमरी,हरिदौठया आदि ताल व झीले है। इसी प्रकार अम्बेडकर नगर जनपद का रदवन एवं हाथ पाकड़ झील सबसे बड़ा ह। यहा अन्य झीलों में खोसी, सुरोला, कछुआ, मंशापुर आादि झीले व ताल है। बाराबंकी की खजुहा ताल सबसे बड़ा है, यहा के अन्य झील व तालाब में कुरियन, बेला, भुसैला, दिरउबा व केवटी है।

मृदा संसाधन :–मिट्टी भू-पृष्ठ पर स्थित ढ़ीले एवं महीन कणों से निर्मित एक पतली परत होती है, जिसमें विभिन्न खनिजों के कण, जैविक अंश, ह्यूमस, आर्द्रता, वायु आदि संयुक्त होते हैं। मृदा का निर्माण मूलतः मौलिक शेलों के अपक्षय तथा अपरदन से प्राप्त होने वाले पदार्थो से होता है, जिसमें जैविक अवशेषों (ह्यूमस) का मिश्रण हो जाता है। **डी0 एन0 वाडिया (1961) के अनुसार"**मिट्टी नदियों द्वारा लाये गये अवसादों के दीर्घकालिक प्रक्रिया से निर्मित होती है**"** मिट्टी का निर्माण दीर्घकालिक विशिष्ट प्राकृतिक परिस्थितियों में हुआ है। प्राकृतिक संसाधनों में मृदा सबसे महत्वपूर्ण एवं आधारभूत संसाधन अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान क्षेत्र है। यहा की 78 प्रतिशत जनसंख्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है, जो मिटटी व जनसंख्या के मध्य सहसम्बन्ध को प्रदशित करता है। मण्डल के मिट्टी में उपस्थित विभिन्न तत्व, कण एवं गठन के आधार पर मिट्टी को 5 वर्गो में विभाजित किया गया है।

- बालू प्रधान काप मिट्टी
- बलुई मिट्टी
- ऊसर भूमि व क्षारीय मिट्टी
- मटियार मिट्टी
- दोमट मिट्टी

वनस्पति :–उपोष्ण जलवायु के कारणअध्ययन क्षेत्र में पतझड़ वाले मानसूनी वनो की अधिकता है। यद्यपि मण्डल में विस्तृत क्षेत्र पर वन क्षेत्रों का अभाव है, परन्तु यहाँ आम, नीम, जामुन, महुआ, पीपल, साल, सागौन आदि के वृक्ष बहुतायत पाये जाते थे। यहा प्राकृतिक रूप से उगे हुए ढाक, खजूर, बबुल, चीलवील, व लिसोरा आदि के वृक्ष पाये जाते है किंतु ऐसे वनस्पति क्षेत्र को जंगल अथवा बंजर भूमि के नाम से जाना जाता है। वर्तमान समय में बढ़ती हुई जनसंख्या का दबाव, कृषि भूमि का विस्तार तथा अन्य विभिन्न प्रकार के आर्थिक क्रिया-कलापों की प्रधानता आदि कारणों के साथ-साथ मानव का प्रकृति के प्रति उदासीनता के कारण धीरे-धीरे मनुष्य वनस्पति आच्छाादित इन क्षेत्रों को समाप्त कर दिया है। अध्ययन क्षेत्र मे वन क्षेत्र का सर्वाधिक विस्तार पश्चिमी भाग में है, जबकि दक्षिण पूर्व की तरफ वन क्षेत्रों में निरन्तर ह्रास होता जा रहा है। सरयु नदी के उत्तर में स्थित क्षेत्रो में वन क्षेत्र का सामान्य वितरण मिलता है, केवल कुछ कंटीले वृक्ष जैसे– बांस, बबूल, पाकड़ तथा अन्य झाड़ी वाले वृक्ष मिलते हैं।

वर्तमान समय में फैजाबाद मण्डल के समस्त प्रतिवेदित क्षेत्र के 0.27 प्रतिशत क्षेत्र पर वन भू-क्षेत्र पाये जाते है, जो आवश्यकता से बहुत कम है। मण्डल के सुल्तानपुर जनपद के आवला का उत्पादन व्यापक पैमाने पर व्यावसायिक उद्देश्य से किया जाता है। परिणामतः जनपद में आंवले के बागान बहुतायत मिलते है। वृक्ष उपलब्धता की दृष्टि से यहाँ पर शीशम, साल, सागौल, आम, पीपल, बरगद, यूकेलिप्टस, जामुन, इमली आदि के वृक्ष पाये जाते है।

वन्य जीव :–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन क्षेत्र वन्य जीवों की उपलब्धता की दृश्टि से विशेष उल्लेखनीय नही है, जिसका मुख्य कारण सांस्कृतिक भू-दृश्य का प्राकृतिक भू-दृश्य पर प्रत्यारोपण है। बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकता पूर्ति हेतु आवास एवं कृषि भूमि में निरन्तर वृद्धि का वन्य पशुओं के आवास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा हैं, जिसके कारण जीव-जन्तु के लिए उत्पन्न यह विषम परिस्थिति विभिन्न जीव के प्रजातियों को विलुप्त कर दिया है। वन्य जीवों के अन्तर्गत लोमड़ी, सियार आदि घाघरा नदी के निचले क्षेत्र में मिलते है। यहाँ अधिक संख्या में बन्दर पाये जाते हैं। नदी के तटवर्ती क्षेत्रों में नीलगाय बहुतायत से मिलती है।

जलवायविक विशेषताएं :–जलवायु किसी स्थान की ऋतु अवस्थाओ का सूचक होता है। तापमान, वायुभार, वर्षा, आर्द्रता आदि तत्वों से जलवायु का निर्माण होता है। जलवायु सर्वव्यापी एवं अत्यन्त प्रभावशाली तत्व है, जिसके कारण किसी क्षेत्र विशेष के भौगोलिक अध्ययन में इसका सर्वप्रमुख स्थान होता है, साथ ही यह प्रभाव जनसंख्या वितरण पर परिलक्षित होता है।

मध्य गंगा मैदान में केन्द्रित एवं तत्सम्बन्धी विशेषताओं के कारण फैजाबाद मण्डल की जलवायु मानसूनी है। क्षेत्र की जलवायु पर हिमालय की अवस्थिति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दष्टिगत होता है। यहाँ ग्रीष्म, वर्षा, शीत एवं शरद ऋतु की मौसमी विशेषताएं मिलती है। अध्ययन क्षेत्र की स्थिति शुष्क पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं आर्द्रतर पश्चिमी बंगाल के मध्य संक्रमण जलवायु पेटी के मध्य स्थित है, जिसका प्रभाव मण्डल की जलवायविक विशेषताओं पर भी पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र केन्डयु द्वारा वर्गीकृत महाद्वीपीय भारत के अत्याधिक एवं मध्य वर्षा के संक्रमण प्रदेश कोपेन के Cwgथार्नथ्वेट के B' .W तथा टिवार्था के Caw प्रकार की जलवायु प्रदेश है।

मण्डल का औसत वार्षिक तापमान 25.45^0 सेल्सियस पाया जाता है, जबकि औसत वार्षिक तापान्तर 12.6^0 सेल्सियस है। वर्ष का सर्वाधिक तापान्तर दिसम्बर माह में 19.6^0 सेल्सियस पाया जाता है। पश्चिम एवं पूर्व में कोई धरातलीय अवरोध न होने के कारण यहाँ ग्रीष्म ऋतु में धूलयुक्त तप्त आंधियाँ चलती हैं।

सामान्यतः अध्ययन क्षेत्र के जलवायविक विशेषताओं को ध्यान में रखकर वर्ष को चार स्पष्ट ऋतुओं में विभाजित किया जा सकता है।

तालिका संख्या- 2

फैजाबाद मण्डल : जलवायविक विशेषताएं - 2018

माह	तापमान (सेल्सियस में)		
	अधिकतम	न्यूनतम	औसत
जनवरी	21.17	5.14	14.16
फरवरी	24.8	9.96	17.38
मार्च	30.08	13.72	21.90
अप्रैल	37.38	21.06	29.22
मई	41.73	25.7	33.22
जून	38.87	27.6	32.74
जुलाई	34.91	26.48	30.69
अगस्त	33.13	24.78	28.96
सितम्बर	32.11	23.9	28.01
अक्टुबर	31.8	22.21	27.01
नवम्बर	29.18	14.97	22.08
दिसम्बर	23.26	10.76	17.01
औसत	31.37	19.02	25.45

स्रोत : एनालिसिस फार इन्छीग्रटेड डेबलपमेन्ट, फैजाबाद मण्डल

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अध्ययन क्षेत्र फैजाबाद मण्डल सामान्य रूप से उष्णकटिबन्धीय मानसूनी जलवायु के अन्तर्गत आता है। अगर बड़ी गहनता से अध्ययन किया जाय तो इस क्षेत्र की जलवायु अर्द्धशुष्क प्रकार की जलवायु से मिलती है। समुद्र से दूरी की अधिकता के कारण यहा की जलवायु में महाद्वीपीयता का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है। ग्रीष्म ऋत का अधिकतम तापमान 41.73 तथा शीत ऋतु में अत्यधिक निम्न तापमान 5.14 हो जाता है। सामान्यतः मण्डल में तीन ऋतुए शीत ऋतु, ग्रीष्म ऋतु व वर्षा ऋतु पायी जाती है किन्तु भारतीय मौसम विभाग इन तीन ऋतुओं को आधार मानते हुए भारतीय जलवायु का अध्ययन निम्न प्रकार से करते है।

खनिज संसाधन –अध्ययन क्षेत्र में संसाधनों का पूर्णरूपेण अभाव देखने को मिलता है अर्थात फैजाबाद मण्डल खनिज सम्पदा की दृष्टिकोण से अत्यन्त गरीब क्षेत्र है। खनिजो के प्राप्ति क रूप में यहा क्षारीय मिट्टी, रेत, बजरी, कंकड़ को सम्मिलित किया जा सकता है। कुछ जलप्लावित क्षेत्रों में माण्टयोरी लिग्नाइट मिट्टी पायी जाती है, जिसे मृदा विभाग खनिजों की श्रेणी में रखता है।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि – सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का निर्माता मानव, भौगोलिक तत्व, संसाधन व कारक तीनो है। यह स्वयंमेव एक सम्पूर्ण संसाधन होते हुए भी प्रत्येक संसाधन उपयोग का केन्द्र बिन्दु है।मनुष्य के सांस्कृतिक विकास में जहा प्राकृतिक परिस्थितिया आधार प्रदान करती है, वही स्वयं मानव द्वारा सृजित सांस्कृतिक पर्यावरण मानवप्रकृति के गत्यात्मक अन्तर्सम्बन्धा के स्तर एवं अवस्था की व्याख्या करने के साथ साथ कालान्तर में स्वयं मनुष्य के विभिन्न सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तर के वर्गो के सांस्कृतिक उन्नयनय परिवर्तन के लिए उद्दीपन का कार्य करता है। अतः यह स्पष्ट है कि संसार के विभिन्न भागों में प्राकृतिक वातावरण को संशोधित करके सांस्कृतिक भू–दृश्य का सृजन करने वाला केन्द्र स्वयं मानव है।

मानव संसाधन :–मानव की संस्कृति, श्रम कुशलता आदि महत्वपूर्ण संसाधन है, इसलिए मानव को एक प्रभावशाली आर्थिक राजनीतिक संसाधन माना जाता है। निर्वाचन भूगाल में मानव की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है। मानव के अभाव मे पृथ्वी राजनीतिक भौगोलिक संसाधन विहीन है, क्योंकि मानव की आवश्यकता एवं उपयोग के सन्दर्भ में ही कोई तत्व, दशा या वस्तु संसाधन एवं उद्देश्यपूर्ण बन सकता हैं। इसके साथ ही किसी क्षेत्र के राजनीतिक, सामाजिक-आर्थिक विकास के विभिन्न चरणों का संरचनात्मक स्वरूप भी जनसंख्या द्वारा ही निर्धारित होता है। अतः किसी भी देश के राजनीतिक विकास के लिए आवश्यक है कि वहाँ पर मानवीय संसाधनों का विकास योजनाबद्ध रूप से किया जाय। जनसंख्या कीराजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक संरचना उसे एक संसाधन के रूप में विकसित करती है। इसके साथ ही मानवीय संसाधन का मात्रात्मक एवं गुणात्मक विशेषता किसो भी क्षेत्र के लिए वरदान या अभिशाप सिद्ध हो सकती है। मानव संसाधन सर्वाधिक गत्यात्मक, सर्वाधिक दक्ष एवं सर्वाधिक मूल्यवान होता है क्योंकि वह सभी प्रक्रियाओं का धुरी स्तम्भ होता है।

सामान्यतः मानवीय संसाधन के अन्तर्गत जनसंख्या का सम वितरण, वृद्धि, आयु संरचना, यौन अनुपात, व्यावसायिक संरचना आदि तत्वों का अध्ययन किया जाता है तथा यही तत्व संसाधन उपयोग को अलग-अलग ढ़ंग से प्रभावित करते है। अध्ययन क्षेत्र फैजाबाद मण्डल में मानवीय संसाधनों के अन्तर्गत जनसंख्या वृद्धि, वितरण, घनत्व, साक्षरता, कार्यशील जनसंख्या आदि तथ्यों का अध्ययन निर्वाचन सम्बन्धी प्रक्रिया का प्रभावित करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते है।

जनसंख्या सम्बन्धी विवरण के अध्ययन से ज्ञात होता है कि मण्डल में वर्ष 2001 में कुल जनसंख्या 10004217 थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 12877500 हो गया है। इसी प्रकार यहा जनसंख्या घनत्व 1991–2001 के मध्य 758 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 था जो 2001–2011 के मध्य बढकर 888व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 हो गया है। इस पकार कुल जनसंख्या घनत्व में वृद्धि 138 हुआ। यदि साक्षरता पर दृष्टिपात किया जाय तो 2001 में मण्डल की कुल साक्षरता प्रतिशत 54.2 था, जो 2011 में बढकर 67 प्रतिशत हो गया है। इसी पकार अध्ययन क्षेत्र में 2001 में लिंगानुपात 945 था वही 2011 में यह बढ़कर 958 हो गया है। अगर ग्रामीण जनसंख्या की बात की जाए ता 2001 में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 91.3 था , जो 2011 में घटकर 90.6 प्रतिशत ही रह गया है। इसी प्रकार नगरीय जनसंख्या जहा 2001 में 8.7 प्रतिशत थी वही 2011 में बढकर 9.4 प्रतिशत हो गयी है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में अनुसूचित जाति एवं जनजाति का प्रतिशत 2001 में 24 प्रतिशत है वही 2011 में यह बढकर 26.5 प्रतिशत हो गया है।

जनपद का नाम	कुल जनसंख्या (हजार में)	जनसंख्या का घनत्व	नगरीय जनसंख्या प्रतिशत में	जनसंख्या वृद्वि प्रतिशत में
सुल्तानपुर	3214	910	6.0	24.9
अम्बेडकरनगर	2287	1018	11.7	18.0
फैजाबाद	2367	980	13.8	18.3
बाराबंकी	2674	838	10.9	22.0
अमेठी	2027	802	5.7	32.3
मण्डल	1004	902	9.9	6.3

सड़कों का वर्गीकरण एवं वितरण :–

फैजाबाद मण्डल में पक्की सड़कों की कुल लम्बाई 19962 किमी0 है। अध्ययन क्षेत्र में सड़क मार्ग का वितरण मुख्यतः दो विभागों के अन्तर्गत–. लोक निर्माण विभाग एवं स्थानीय निकायों के अन्तर्गत पायी जाती है। लोक निर्माण विभागों के अन्तर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग, प्रादेशिक राजमार्ग, मुख्य जिला सड़क एवं ग्रामीण सड़क मिलती है, जबकि स्थानीय निकायों के अन्तर्गत जिला पंचायत एवं नगर निगम की सड़कें मिलती हैं। जनपद में सड़कों की लम्बाई का वितरण निम्न तालिका से स्पष्ट है।

तालिका संख्या - 3
फैजाबाद मण्डल : सड़क मार्ग का वितरण (2017-18)

क्रमांक	सड़क मार्ग	लम्बाई (किमी0 में)
अ	**लोक निर्माण विभाग के अन्तर्गत**	**17910**
1	राष्ट्रीय राजमार्ग	450
2	प्रादेशिक राजमार्ग	276
3	मुख्य जिला सड़कें	461
4	अन्य जिला ग्रामीण सड़कें	16723
ब	**स्थानीय निकायों के अन्तर्गत**	**2042**
1	जिला पंचायत	962
2	नगर निगम नगर पंचायत	1080
	योग	**19962**

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका 2017.18

मण्डल में सड़क परिवहन का विस्तृत व व्यापक नेटवर्क है। यात्री परिवहन के लिए उ0प्र0 सड़क परिवहन निगम की सेवाएं प्रदेश के अन्दर एवं देश की राजधानी दिल्ली तक सीधी है। इसके अतिरिक्त मण्डल में प्राइवेट बसे व टैक्सी भी विद्यमान है। जनपद फैजाबाद श्री राम जन्मभूमिका पवित्र स्थल है, जो विश्व भर के पर्यटको को आकर्षित करता है। यहा पर वर्ष भर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ लगी रहती है। इसस मण्डल से राष्टोय राजमार्ग सं0 28,56 व 96 गुजरता है।मण्डल के अन्तर्गत कुल 403 बस स्टेशन है, जो यात्री सुविधाएं प्रदान करता है।

रेल यातायात – मण्डल मुख्यालय फैजाबाद एक धार्मिक तीर्थ स्थल है, जहा से देश व प्रदेश के प्रत्येक दिशा के लिए सीधी रेल सेवा उपलब्ध है। मण्डल के अन्तर्गत रेल मार्ग की कुल लम्बाई 498 किमी0 है, जिसमें सुल्तानपुर जनपद में 186 किमी0, अम्बेडकर नगर जनपद में 65 किमी, फैजाबाद

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 6, June 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जनपद में 116 किमी0 बाराबंकी जनपद में 131 किमो है। इस मण्डल में कुल रेलवे स्टेशन व हाल्टों की संख्या 71 है। मण्डल मुख्यालय से दिल्ली, मुम्बई, लखनऊ, कोलकाता, इलाहाबाद, हैदराबाद, चेन्नई, जम्मू आदि स्थानों के लिए सीधी रेल सेवा है।

संचार के साधन –मण्डल में संचार साधनों के अन्तर्गत 1624 डाकघर, 1512 पी0सी0ओ0, 29336 टेलीफोन क्नेक्शन है। वर्तमान समय में संचार सेवाएं प्राइवेट कम्पनियो एअरटेल, आईडिया, वोडाफोन, एअरसेल आदि के प्रवेश से लैवड लाइन व फोन के उपयोग में तीव्र गति से वृद्वि हुई है साथ ही निरन्तर वृद्वि जारी भी है। लगातार माबाइल व इन्टरनेट की सुविधाजनक स्थिति ने डाकघरों की हालत खस्ता कर दी है। इनकी सख्या और उपयोग में निरन्तर गिरावट जारी है।

निष्कर्ष –निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि अध्ययन क्षेत्र स्वतन्त्रता से पूर्व ही राजनीतिक पृष्ठभूमि का केन्द्र रहा है, साथ ही इस मण्डल की राजनीतिकभौगोलिक पृष्ठभूमि विविधता पूर्ण है जिससे अध्ययन क्षेत्र का अध्ययन करना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है उपर्युक्त भौगोलिक राजनितिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत सम्मिलित विभिन्न तथ्यों के अध्ययन से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में निर्वाचन प्रतिरूप पर भौतिक और जनांकिकीय विशेषताओं एवं ऐतिहासिक सामाजिक प्रक्रियाओं का परिणाम है, जिससे कारण यह प्रक्रिया निरन्तर प्रभावित हो रही है।

References –

Pound,s, N.J.G. (1963). Political Geography
Krishna, M.S. (1972) Geoglogy of India and Burma, Madras p.573